ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 अगस्त 2019
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२०
युगाब्द-५१२०, अंक-११७, वर्ष-१३
श्रावण, विक्रमी २०७६ (अगस्त 2019)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो नि दहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ –ऋ० १। ७। ७। १॥

व्याख्यान–हे (जातवेदः) परब्रह्मन्! आप (जातवेद हो) उत्पन्नमात्र सब जगत् को जाननेवाले हो, सर्वत्र प्राप्त हो। जो विद्वानों से ज्ञात, सब में विद्यमान, जात अर्थात् प्रादुर्भूत अनन्त धनवान् वा अनन्त ज्ञानवान् हो, इस से आपका नाम 'जातवेद' है। उन आप के लिए (वयम् सोमं सुनवाम) जितने सोम प्रिय गुणविशिष्टादि हमारे पदार्थ हैं, वे सब आपके ही लिये हैं। सो आप हे कृपालो! (अरातीयतः) दुष्ट शत्रु, जो हम धर्मात्माओं का विरोधी, उसके (वेदः) धनैश्वर्यादि [को] (निदहाति) नित्य दहन करो। जिससे वह दुष्टता को छोड़के श्रेष्ठता को स्वीकार करे। सो (नः) हमको (दुर्गाणि विश्वा) सम्पूर्ण दुस्सह दुःखों से (पर्षदति) पार करके आप नित्य सुखको प्राप्त करो। (नावेव सिन्धुम्) जैसे अति कठिन नदी वा समुद्रपार होने के लिए नौका होती है, (दुरितात्यग्निः) वैसे ही हम को सब पापजनित अत्यन्त पीड़ाओं से पृथक् (भिन्न) करके संसार में, और मुक्ति में ही परम सुख को शीघ्र प्राप्त करो ॥

सम्पादकीय

ऐतिहासिक प्रायश्चित !

करोड़ों वर्षों तक जिसके सामने संसारभर में कोई भी प्रतिस्पर्धी, प्रतिद्वन्दी न रहा हो, रहे हैं तो मात्र अनुयायी और अनुचर बनकर। जब वह देश गुलाम हुआ होगा, पराधीन हुआ होगा, तब उस देश के जनमानस पर क्या बीती होगी? कितनी असहनीय पीड़ा जलालत भरी जिन्दगी, कदम-कदम पर नंगी तलवारों के तले मृत्यु जब मुंह खोले खड़ी दिखती रहती हो, तब कितना भयानक और वीभत्स जीवन जिया होगा हमारे पूर्वजों ने? अपमान, तिरस्कार के साथ-साथ तड़प तड़पकर मृत्यु का वरण करना कोई खुशी से तो नहीं करता? किन्तु जब जीवन मौत से भी दुःखदायी हो जाता हो! तब मौत में ही सुख दिखता है और हमारे लाखों पूर्वजों ने इसी कारण मृत्यु का वरण कर लिया।

१५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्रता के उपरान्त यदि ऐसा भयानक अत्याचार-पूर्ण जीवन किसी राज्य के लाखों लोगों ने भोगा, ऐसे जीवन का साक्षात्कार किया तो वे थे कश्मीर की घाटी में निवास करने वाले कश्मीर के मूल निवासी, जिनको प्रायः कश्मीरी पंडितों के नाम से जाना जाता है। क्या नहीं भोगा उन्होंने अपने जीवन में, अपना तिरस्कार, अपमान, अपनी पत्नियों, बेटियों, बहनों की लुटती अस्मिता, अपने उजड़ते बादाम, अखरोट और सेब के बाग, केसर की खेती और अन्त को अपने छूटते घर। अपने ही देश में अपना सब कुछ होते हुए खानाबदोशों का जीवन, टेन्टों में, शहरों के फुटपाथों पर, पाई पाई तिनके-तिनके के लिये संघर्ष! यह सब क्यों हुआ? क्योंकि हमारे देश के तत्कालीन राजनेता अब्दुल्ला परिवार सहित मुसलमानों के दबाव में निर्णय लेते रहे और लाखों मूलनिवासियों की सुरक्षा की कोई चिन्ता नहीं रही, मुख्य रूप से पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने धारा ३७० जैसा विशेष दर्जा देकर सम्पूर्ण कश्मीर और कश्मीरी मुस्लमानों को यह जता दिया कि भारत में रहने का आपका निर्णय भारत पर आपका अहसान है। शेष भारत पर आपका ऋण है और हम सब भारतीय तथा कश्मीरी पंडित आपके ऋणी हैं। जैसा चाहो आप ऋण वसूल कर लो! आप हमारे साहूकार हो! माई बाप हो!

नेहरू मंत्रीमण्डल में माननीय मंत्री रहे, कश्मीर से ठीक विपरीत दिशा में पूर्वी समुद्र तट पर स्थित बंगाल में जन्मे डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इस स्थिति को समझा और १९५१ में संघ प्रमुख श्री माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर जी के परामर्श से "भारतीय जनसंघ" की स्थापना की। इसी के साथ प्रारम्भ हुआ "कश्मीर बचाओ आन्दोलन"। आर्य विचारधारा के कश्मीर घाटी निवासी प्रो. बलराज माधोक आदि राष्ट्रप्रेमी नेताओं का साथ मिलने से यह आन्दोलन आगे बढ़ा और डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी का अब्दुल्ला-नेहरू सरकारों ने कश्मीर में बलिदान ले लिया। १९५१ ई० से २०१९ तक प्रथम भारतीय जनसंघ और फिर अस्सी के दशक में भारतीय जनता पार्टी सहित सभी राष्ट्रवादी लोग कश्मीर के शेष भारत के साथ एकरस बनने बनाने की आकांक्षा लेकर जीवन जीते रहे, लाखों लोग इस आकांक्षा के साथ मरते भी जाते रहे। इस आकांक्षा के पूरा होते ही देह त्याग करने वाली श्रीमती सुषमा स्वराज जैसी तेजस्वी नेता एवं वक्ता को भी भला कौन भूल सकता है।

आखिर ६ अगस्त २०१९ को राष्ट्र की, राष्ट्रवादियों की पूरी हुई यह आकांक्षा महर्षि पतंजलि जी के "योगदर्शन" के एक सूत्र "दीर्घकाल नैरन्तर्य्यै सत्कार सेवितो दृढ़भूमिः" का स्मरण तो कराती ही है कि १९४७ कश्मीर के विलय के समय से अब लगभग ७२ वर्ष लम्बेकाल तक कैसे हमारे भीरू राजनेता राष्ट्र की एक माहामारी को साथ लेकर घिसटते हुए राजनीति और शासन करते रहे, जबकि यह

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

समस्या इतने बड़े देश के लिए कोई इतनी बड़ी नहीं थी। करोड़ों लोग इसका परिहार चाहते थे, वे करोड़ों लोग राजनैतिक दलों के मतदाता थे, समर्थक-भाग्यविधाता थे किन्तु फिर भी आत्मबल विहीन सरकारें थी। अतः अब जो निर्णय हुआ है, वह स्वागत योग्य है। किन्तु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए पांच करोड़ मदरसा ब्रांड छात्रों को छात्रवृति, कन्याओं को विवाह के लिए नकद धनराशि और उच्चाधिकारी बनाने की सरकार की तुष्टिकरण पूर्ण योजनाएं कहीं सम्पूर्ण भावी भारत को ही कश्मीर न बना बैठें? और हम कश्मीर से धारा ३७० के हटने के उल्लासमय उत्सव में भूल न जायें कि- कश्मीर सम्पूर्ण भारत नहीं! भारतवर्ष का एक छोटा सा किन्तु महत्वपूर्ण अंग है, फिर भी भारत तो भारत है। और हमारा लक्ष्य तो इससे उच्च है, आगे है- ''आर्यावर्त्त''! ''सम्पूर्ण अखण्ड आर्यावर्त्त'' ! ''परमवैभवशाली आर्यावर्त्त''!

बेटी बचाओ आन्दोलन कैसे सफल हो?

- आचार्या डॉ. सुशीला आर्या

बेटी बचाओ के लिए आजकल पूरे देश में खूब नारे लग रहे हैं। मां के गर्भ में आने के साथ ही बेटी को बचाने के लिए बचाओ बचाओ की पुकार मची हुई है। बेटियों को बचाने की ये पुकार दिन-प्रतिदिन इतना जोर पकड़ी जा रही है कि देश के प्रधानमन्त्री तक को राष्ट्रीय-सुरक्षा जैसे गम्भीर मुद्दों को छोड़कर लोगों को समझाना पड़ रहा है कि अपने ही खून की हत्या न करो, और नारा भी दिया है- 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' इसलिए देश के वित्त मंत्री ने भी बजट में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ को शामिल किया है। सभी राजनैतिक दल, राज्य सरकारों, सामाजिक संगठनों महिला एवं बाल विकास विभाग कारपोरेट सेक्टर इसी अभियान का रोडमैप बनाने में लगे है कि बेटियों को कैसे बचाया जाये? और अब तो धर्मगुरु व धर्मप्रचारक भी अपने प्रवचन के दौरान बेटी के महत्व की बात करने लगे हैं, लोगों को समझा रहे है। बेटियों को कैसे बचाया जाये। अभी कुछ दिन पहले समाचार-पत्रों में आया कि हरियाणा के झज्जर जिले में देशभर से पांच हजार संतों ने प्राचीन सिद्ध पीठ बाबा प्रसाद गिरि मन्दिर के वार्षिक समारोह के समापन पर बेटी बचाओ का आह्वान किया। सभी समाचार-पत्रों में, मीडिया में, बैनरों में, रैलियों में, सभाओं में, कवि सम्मेलनों में, स्कूलों व कॉलेजों में सभी जगह एक ही नारा छाया हुआ है- 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'। पूरा देश इसी चिन्ता में डूबा हुआ है कि यदि बेटियां इसी तरह कम होती रही तो बेटों के लिए बहुं कहां से आयेंगी? कुलदीपक कौन पैदा करेगा? वंश कैसे चलेगा। हरियाणा प्रान्त में तो लिंग अनुपात इतना बिगड़ चुका है कि किसानों को बंगाल, बिहार, छतीसगढ़ से गरीब घरों की लड़कियां खरीदकर लानी पड़ रही हैं ताकि वंश चल सकें।

भारत जैसे देश मे कैसे ऐसा घिनौना अपराध हररोज होता है। यह शर्मनाक बात है। बेटियों के जीवन के लिए बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान गर्व की बात नहीं है, शर्म की बात है। माता-पिता को कहना पड़ रहा है कि अपने खून की हत्या न करो, अपनी ममता को तार-तार न करो। बेटियों के लिए बहुत सी योजनाएं चल रही हैं और ये भी उनमें से एक है। प्रश्न केवल बेटियों को बचाने का ही नहीं बल्कि मौत से भी बदतर गुलामी की जिन्दगी से बचाने का भी है। समाज में लगातार महिलाओं से छेड़छाड, बलात्कार, यौन-उत्पीडन की घटनाएं बढ़ रही हैं। केवल भारत में ही नहीं इतिहास इस बात का साक्षी है कि नारी की ये स्थिति पश्चिम से लेकर पूर्व तक सभी देशों के इतिहास में देखने को मिलती है। कन्या-भ्रूण हत्या का जो महापाप समाज में प्रचलित हो गया है उसका मुख्य कारण नारी जाति का समाज में उचित सम्मान न होना है। लाख प्रचार के बावजूद भ्रूण हत्याएं होती रहेगी और यदि वे रूक भी जाऐं तो बर्बर, उत्पीडन भरी जिन्दगी मौत से भला किन अर्थों में अच्छी कही जा सकती है। महिलाओं की सामाजिक आजादी के आन्दोलन के बिना बेटी बचाओ आन्दोलन का कोई औचित्य नहीं है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने समय में कैंसर रोग के समान भयानक रुप से समाज को कमजोर करने वाली सभी सामाजिक बुराईयों के विरूद युद्ध छेड़ा था। महर्षि ने उस समय जबकि भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अत्यन्त दयनीय, अशिक्षा, अन्धविश्वासों, आडम्बारों में जकड़ी अधिकातर महिलाएं अपने घरों में भी गुलामों की भांति रहा करती थी, उस समय ऋषि दयानन्द ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हजारों वर्षो बाद ये घोषणा की कि महिलाओं को भी पढ़ने का अधिकार है। उनका कहना था कि शिक्षा स्त्रियों की सभी समस्याओं के निवारण के लिए रामबाण औषधि है। हमारा समाज महिलाओं की अशिक्षा के कारण ही दुर्बल हुआ है, हजारों वर्षों पराधीन रहा है, क्योंकि अशिक्षा व अबला नारी सबता का निर्माण नहीं कर सकती। अन्ततः वो सन्तति बनी जो अपने राष्ट्र की रक्षा करने में सक्षम नहीं हो सकी। ऋषि दयानन्द की प्ररेणा से ही 1889 में जालन्धर (पंजाब) में प्रथम आर्ष कन्या विद्यालय की स्थापना हुई। इसी के साथ हजारों वर्षों से शिक्षा के बन्द द्वार महिलाओं के लिए भी खुले । आज महिलाएं हर क्षेत्र में जो अपना परचम लहरा रही हैं। उसका श्रेय ऋषि दयानन्द व उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज को जाता है। लेकिन ये भी सत्य है कि आज भी करोड़ों महिलाएं इस देश में नारकीय जीवन जी रही हैं, अबला हैं, शोषित हैं। ऋषि ने सभी समस्याओं का मूल कारण अविद्या, अज्ञान को माना है। इन सभी समस्याओं का निवारण वेदविद्या से ही संभव है। इसलिए ऋषि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है- ''संसार मे जितने दान है, जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, सुवर्ण और घृतादि इन सब दोनों में वेद विद्या का दान अतिश्रेष्ठ है। इसलिए अधिक से अधिक प्रयत्न धनादि से वेदविद्या की वृद्धि में किया करें । जिस देश मे यथायोग ब्रह्मचर्य विद्या और वेदोक्त धर्म का प्रचार होता है। वही देश सौभग्यवान होता है। कन्यानां सम्प्रदानं च कुमाराणां च रक्षणम् अर्थात् राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को उक्त समय तक ब्रह्मचर्य में रख के विद्वान करना। जो कोई इस आज्ञा को न माने तो उनको माता-पिता को दण्ड देना जिससे आठ वर्ष के पश्चात् लड़का लड़की किसी के घर में न रहने पायें, किन्तु आचार्य कुल में रहें। जब तक कम से कम सोलह वर्ष की लड़की और पच्चीस वर्ष का लड़का न होवे अर्थात् समावर्तन संस्कार पर्यन्त।''

ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट रूप से महिलाओं को भी पुरूषों के समान शिक्षा का अधिकार देने की वकालत की है। स्त्रियों को भी आत्मिक विद्या का वैसा ही अधिकार है जैसा पुरुषों को। तभी समाज व राष्ट्र की उन्नति संभव है। ऋषि दयानन्द के अनुसार वैदिक काल में नारी का स्थान उच्च रहा है कि विश्व के किसी भी देश व धर्म में उसका अंश भर भी देखने को नहीं मिला। वेदों की नारी की स्थिति अत्यन्त गौरवपूर्ण रही है। वेदों की नारी पूज्या है, वीरांगना है। परिवार, समाज व राष्ट्र का निर्माण करने वाली है। अगर अब भी वेद की शिक्षा उसे दी जाये तो वह पुनः उसी गौरव को प्राप्त कर सकती है। फिर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे आन्दोलन करने की आवश्यकता नहीं होगी।

गृहस्थ सम्बन्ध-२

-आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर,

गृहस्थ सम्बन्धों में एक और महत्वपूर्ण नियम है- एक दूसरे को मन से प्राप्त होना। उनके संबंधों के ठीक न होने में यह भी एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण है। अतः वधू-वर के माता-पिता का कर्तव्य है कि विवाह से पूर्व ही यह सुनिश्चित कर लें कि दोनों परस्पर संबंध के लिए मन से तैयार हैं वा नहीं ? वधू-वर का भी कर्तव्य है कि परस्पर भेंट कर जहां अन्य अनेक विषयों पर बात करते हैं वहां यह भी जान लेवें कि दोनों एक-दूसरे को मन से स्वीकार करते हैं वा नहीं। और जिनका विवाह हो चुका है और सुखी रहना चाहते हैं, उन्हें दिखावा छोडकर मन की गहराईयों में अपने संबंध के लिए स्थान बनाना चाहिए ताकि यह प्रतिज्ञा सत्य हो सके- **'स त्वा मन्मनसां करोतु'।**

एक दूसरे को मन से प्राप्त होने का अर्थ है प्रेम पूर्वक समर्पण करना। बिना एक-दूसरे को मन से प्राप्त हुए अर्थात् बिना समर्पित हुए परस्पर के कर्तव्यों को पूरा करना सम्भव ही नहीं हो सकता। अतः पति-पत्नी में से यदि कोई एक भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन नहीं करता है तब ये अधूरापन दुःख ही तो उत्पन्न करेगा। विवाह में भी जब दोनों मन से प्राप्त होते हैं ऐसा स्वीकर करने पर कर्तव्यों के कहने का क्रम आरम्भ होता है। यज्ञ मण्डप में आते ही वर वधू से कहता है कि हे वधू! तू अपतिघ्नि, अघोरचक्षु, शिवा, सुमनाः, सुवर्चाः, वीरसूः, देवृकामा, स्योना, आदि गुण वाली हो। आइए उपरोक्त शब्दों के भाव समझने का प्रयास करते हैं।

अपतिघ्नि- पति से विरोध न करने हारी, पति से विरोध न करने का तात्पर्य कहीं उसकी ठीक-गलत सब बातों को बिना विरोध किये मानना नहीं है। क्योंकि पत्नी शब्द का ही अर्थ है पतन से बचाने वाली। अतः पति को कुमार्ग पर जाने से रोकना तो उसका अधिकार है, लेकिन उससे पति आशा करता है कि तू मेरी विरोधी न हो क्योंकि दो विरोधी लोगों का दीर्घकाल तक एक साथ रहना सम्भव नहीं है। कई बार देखा जाता है कि घरों में ऐसी स्थिति बन जाती है कि मुझे इसकी बात नहीं सुननी, नहीं माननी, यह वह विरोध है। जब दोनों एक दूसरे की सुनने, मानने और विचार करने को तैयार नहीं तब गृहस्थ नरक नहीं तो और क्या बनेगा?

दूसरा शब्द है **अघोरचक्षु** - अर्थात क्रूर दृष्टि से देखने वाली न हो, प्रिय दृष्टि हो। जब कोई अपना विरोध प्रकट नहीं करता, अन्दर ही अन्दर छिपाए रहता है तब उसकी दृष्टि द्वारा भीतर छिपा विरोध प्रकट होता है अर्थात् प्रियदृष्टि होने से तात्पर्य है भीतर भी विरोध न रहना चाहिए। जब विरोध न होगा तब प्रेम ही तो होगा।

तीसरा शब्द है **शिवा** - मंगल करने हारी। घर की स्वामिनी अमंगल कैसे कर सकती है? अर्थात् अपने घर में कल्याण ही करना है। हे देवी तेरे मंगल करने से ही हम दोनों का यह गृहस्थ मंगलमय होगा। अतः तू मंगलकारिणी हो!

चौथा शब्द है **सुमनाः** - पवित्रान्तःकरणयुक्त, प्रसन्नचित्त। स्मृतिकार कहते हैं कि 'स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वं तद् रोचते कुलम्' जहाँ स्त्री प्रसन्न है वहाँ सब प्रसन्न हैं। प्रसन्नता के लिए अन्तःकरण पवित्र रहना आवश्यक है क्योंकि जिसके मन में पाप छिपा है, प्रसन्नता के सारे साधन भी उसको प्रसन्न नहीं कर सकते अतः अन्तःकरण का पवित्र होना बहुत आवश्यक है।

पाँचवा शब्द है **सुवर्चाः** - सुन्दर शुभ गुण कर्म स्वभाव और विद्या से सुप्रकाशित। प्रकाशित होना कौन नहीं चाहता, सभी संसार के सामने दिखना चाहते हैं। इस दिखने के चक्कर में अपनी स्वस्थ परम्पराओं को तोडने से भी पीछे नहीं हटते हैं। इस इच्छा को रोका नहीं जा सकता अतः ठीक दिशा देना आवश्यक है और ठीक दिशा यह है कि हे वधू! तू अपने शुभ गुण, कर्म, स्वभाव और विद्या से अच्छी प्रकार प्रकाशित हो अर्थात् तेरा कोई दुर्गुण, दुष्कर्म, दुष्टस्वभाव और अविद्या प्रकाशित न हो। यहाँ पति व उसके परिवार को भी यह जानना आवश्यक है कि यदि वधू अपने सुन्दर शुभ गुण, कर्म और स्वभाव को संसार के समक्ष प्रकट करना चाहती है तो उसके मार्ग को प्रशस्त करे, रोके नहीं।

छटवाँ शब्द है **वीरसूः** - उत्तम वीर सन्तानों को उत्पन्न करने हारी। कायर सन्तानों के माता या पिता बनना कोई नहीं चाहता है। माता यदि सन्तान को वीरता के संस्कार दे-दे तो उसके जीवन में वीरत्व रहेगा, वैसा ही कायरता के सम्बन्ध में भी है। शिवाजी आदि वीरों के कई उदाहरण इस संबंध में दिये जा सकते हैं। अतः वर वधू को प्रेरणा करता है कि तू वीर सन्तानों को उत्पन्न करने वाली हो।

सातवाँ शब्द है **देवृकामा** - देवर की कामना करने वाली। यह शब्द बड़ा महत्वपूर्ण है और बड़ा विवाद भी इसके साथ जुड़ा रहा है। जी हाँ देवर की कामना से तात्पर्य है नियोग के लिए भी तैयार रहना। नियोग से सम्बन्धित विवाद पर बहुत लिखा जा चुका है अतः यहाँ उस पर चर्चा नहीं कर रहे हैं। देवृकामा शब्द से इतना समझ लेना चाहिए कि वर अपनी वंशवृद्धि के सम्बन्ध में आश्वस्त हो लेना चाहता है और वधू से कहता है कि यदि किसी विकट स्थिति में नियोग से भी मेरे वंश की वृद्धि करनी पड़े तो भी पीछे मत हटना। अर्थात् निश्चित ही मेरे वंश को आगे बढाना।

आठवाँ शब्द है **स्योना** - सुखयुक्त होके हमारे परिवार को भी सुखी करने हारी। इसके बाद भी वर कहता है कि तू मेरे लिए शिवतमा अर्थात् अत्यन्त कल्याण करने हारी हो जिससे हम श्रेष्ठ सन्तानों का निर्माण कर सकें और गृहस्थ जीवन को सुखपूर्वक बितावें।

वर जहाँ वधू के समक्ष स्पष्ट कर देना चाहता है वहीं वधू वर को नेता मानते हुए उसके नेतृत्व में विश्वास व्यक्त करती है। वह उस यज्ञ की प्रतिष्ठा के लिए वर के पीछे चलते हुए परिक्रमा करती है, और साथ-साथ कहती है कि हे पतिदेव! मेरे लिए जो कल्याणकारी व उपयुक्त मार्ग है वह प्रशस्त कीजिए। वास्तव में जीवन के किसी भी क्षेत्र में समर्पण का अपना महत्व है, चाहे किसी भी क्षेत्र में हो। जैसा और जितना समर्पण होगा वैसी ही प्राप्ति होगी। ये सम्भव है आपसी सम्बन्धों में आप द्वेष पाल लें और एक दूसरे से बदला लेकर सन्तुष्ट होना चाहें परन्तु स्मरण रहे युद्ध से लड़ाई बखेडे से अधिकार मिल सकता है, प्रेम नहीं। वस्तुतः प्रेम तो समर्पण का ही दूसरा नाम है।

स्त्री-पुरुषों में एक स्वाभाविक आकर्षण रहता ही है, युवा अवस्था में स्त्रियों में स्त्रित्व और पुरुषों में पुंसत्व जिस समय शरीर में आने लगता है उस समय आकर्षण की यह स्थिति अनियन्त्रित जैसी हो जाती है, इसी को अधिकांश युवक-युवतियाँ प्रेम समझ लेते हैं। जबकि यह आकर्षण मात्र है जो अपने सुख की चाह में उपजा है। प्रेम तो यह तब बनता है जब एक दूसरे के सुख-दुःख, मान-अपमान, हानि-लाभ और भावनाओं आदि को जानने-समझने व संवारने- सम्भालने के प्रति समर्पण हो जाता है। तब अपना अहंकार, सम्मान आदि अत्यन्त छोटा हो जाता है। एक आर्य दम्पत्ति में ऐसा ही प्रेम विकसित हो सके यही ऋषियों की इस समर्पण के प्रति भावना है।.....

हिन्दी की अनिवार्यता

- आचार्य कुलबीर, पंचकुला

प्रत्येक मनुष्य सुख चाहता है और वह इस के लिए प्रयत्न भी करता है, लेकिन उसे सुखी होने के लिए दूसरों के कर्मों पर भी निर्भर रहना पड़ता है। इसका अर्थ हुआ कि यदि व्यक्ति को सुखी होना है तो दूसरों को भी उसके हित के अनुसार ही कार्य करना होगा। दूसरे उसके हित के लिए कब कार्य करेंगे? जब व उसे जानेंगे, उसे अपना मानेंगे। लेकिन यह सब भी कब होगा? जब उनकी भाषा या बोली एक होगी, क्योंकि जब एक-दूसरे के भाव को ही नहीं समझ पायेंगे तो कैसे एक-दूसरे के हित के लिए कार्य करेंगे?

सृष्टि के आदि से देखें तो सभी की भाषा एक ही थी और करोड़ों वर्षों तक हमारी एक ही भाषा रही। जब तक सभी की एक भाषा संस्कृत रही, तभी तक हम सभ्यता व उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर थे। लेकिन महाभारत के युद्ध के पश्चात् से ही विनाश का वह दौर चला कि हम पतन के गर्त में पहुंच गये।

हजारों वर्षों की घोर गुलामी के काल में हमारी श्रेष्ठ संस्कृत भाषा नष्ट प्रायः सी हो गई। प्राकृत, पाली आदि अनेकों भाषायें आती गई व संस्कृत के अपभ्रंश से ही आर्य भाषा अर्थात् हिन्दी का प्रार्दुभाव हुआ। यह संस्कृत के अधिक निकट है, भारत में सबसे अधिक बोली जाती है। इससे हमारे मन में जो भाव उत्पन्न हुआ वह सत्य ही था कि हिन्दी ही इस राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सकती है।

हजारों वर्षों की गुलामी व लाखों राष्ट्रभक्तों के बलिदान के बाद यह राष्ट्र स्वतन्त्र हुआ। जब राष्ट्र स्वतन्त्र हुआ तो उस समय यह ५५० से अधिक छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटा था। इस बिखरे हुये राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोना एक दुष्कर कार्य था। लेकिन लौह-पुरुष सरदार पटेल जी के अनथक प्रयासों से यह राष्ट्र एक सूत्र में पिरोया जा सका। हमारा यह राष्ट्र भौगोलिक रूप से एक राष्ट्र बन गया।

लेकिन विचारणीय विषय है कि क्या भौगोलिक रूप से इक्ट्ठा कर देने से ही कोई राष्ट्र एकता के सूत्र में बंध जाता है? नहीं! राष्ट्र एकता के सूत्र में तब बंधता है जब राष्ट्र के लोगों की एक भाषा हो! यह बात उस समय के राजनेता भी अच्छी तरह से जानते थे कि जब तक इस राष्ट्र की एक भाषा नहीं होगी तब तक यह एक सूत्र में बंधा नहीं रह सकता और वह भाषा वर्तमान में आर्य भाषा अर्थात् हिन्दी ही हो सकती है। उन्होंने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का प्रयत्न तो किया शेष अगले पृष्ठ पर...

पिछले पृष्ठ का शेष...

लेकिन वे थोडे से विरोध को देखते ही हट गये क्योंकि दक्षिण भारत के राज्य हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के विरूद्ध थे, उन्होंने हिन्दी भाषा का पुरजोर विरोध शुरू कर दिया और वे अपने उद्देश्य में सफल हुये। सरदार पटेल जैसा लौह-पुरुष भी घबरा गया और वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिला पाये।

लेकिन उस समय से ही अपने आप को राष्ट्रवादी कहने वाले लोग- जो कहते थे कि हिन्दी-हिन्दू और हिन्दुस्तान हमारी जान है। जो हिन्दी को राष्ट्र भाषा न बनाने पर दिन-रात सरकारों को कोसते थे व विरोध प्रदर्शन करते थे वे लोग आज क्या कर रहे हैं?

जब देश की बागडोर इन राष्ट्रवादियों के हाथ में आ गई है तो ये क्या कर रहे हैं? जब नई शिक्षा नीति का प्रारूप देश के सामने रखा गया तो हिन्दी की अनिवार्यता को देखकर फिर विरोध प्रदर्शन हुए और हमारे देश के मानव-संसाधन मंत्री को संसद में बयान देना पड़ता कि यह अन्तिम प्रारूप नहीं है यह तो केवल लोगों के सुझाव के लिए है और उन्होंने संसद में कहा कि हिन्दी पूरे राष्ट्र में अनिवार्य नहीं की जाएगी।

अरे! जो लोग अपने आप को हिन्दी के लिए समर्पित जन कहते थे, जिनका राजनीति का यह एक अहम मुद्दा था, वे इसके लिए आत्मदाह की धमकी देते थे, वही लोग आज जब अवसर आया तो थोड़े से भी विरोध को नहीं सहन कर पाये और मैदान छोड़ दिया। क्या ऐसे डर का प्रदर्शन करके हिन्दी को राष्ट्र भाषा बना पाओगे?

याद रहे, राष्ट्र की एकता के लिए एक सम्पर्क भाषा का होना अनिवार्य है। यदि स्वतन्त्रता के ७२ वर्षों के पश्चात् भी हम राष्ट्र में एक भाषा को राष्ट्रभाषा नहीं बना पाये तो ध्यान रखना राष्ट्र को एक सूत्र में बांधकर नहीं रखा जा सकता।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसा ऋषि इस बात को स्वीकार करता है और अपने जीवन में व्यवहार में लाता है। इतना ही नहीं ऋषि दयानन्द गुजराती भाषी होते हुये तथा संस्कृत के विद्वान् होते हुए भी अपना अधिकांश लेखन हिन्दी भाषा में रचते है।

याद रहे! यदि आज भी, जब इन राष्ट्रवादियों की केन्द्र में पूर्ण बहुमत की सरकार है, आधे से अधिक राज्यों में इनकी सरकारें हैं, हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिला पाये या लागू नहीं कर पाये तो यह राष्ट्र के लिए बड़ा घातक होगा, क्योंकि इस राष्ट्र में अलगाववाद की भयंकर स्थिति है।

यदि सरकार आज हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में लागू नहीं करवा पाई तो इसके परिणाम बड़े भयंकर होंगे। आज तो केवल दक्षिण में ही हिन्दी के विरूद्ध आवाजें उठ रही हैं, यदि ऐसा ही रहा तो देश के प्रत्येक कोने से ऐसी ही विरोध की आवाजें उठेंगी। याद रहे जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में भी उर्दू की अनिवार्यता के लिये आवाजें बुलन्द होंगी और ऐसी डरपोक सरकारें क्या उस विरोध को झेल पायेंगी? क्या पुनः धर्म के बाद भाषाओं के आधार पर इस राष्ट्र का विखण्डन नहीं होगा?

सावधान! यदि किसी व्यक्ति के स्वजन ही उसकी हत्या करने को तत्पर हो जायें तो वह बेचारा क्या करेगा? उसके बहारी लोग तो दुश्मन पहले से ही हैं और अब स्वजन भी उसे मौत की नींद सुलाने को तैयार खड़े हैं। हिन्दी की भी यही स्थिति है जो हिन्दी-हिन्दू और हिन्दुस्तान का उद्घोष लगाते थे, जब वही सत्ता में आए तो हिन्दी से आंखे फेर ली, उसी के दुश्मन बन बैठे। तो बताइये कौन करेगा हिन्दी का उद्धार? कैसे बनेगी हिन्दी इस राष्ट्र की राष्ट्रीय भाषा?

आर्यों ध्यान रहे, यह राष्ट्र हम सब का है और बिना एक भाषा के यह राष्ट्र एक सूत्र में नहीं बन्ध सकता और वर्तमान में हिन्दी ही राष्ट्रभाषा के रूप में इस राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सकती है।

इसीलिए इस राष्ट्र के आमजन को इस राष्ट्र के हित के लिए आगे आना होगा, इसके लिए संघर्ष करना होगा। सब जन मिलकर के सरकार को लिखें, उन्हें उनके पुराने वायदे व प्रदर्शन याद दिलायें, जो उन्होंने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाये जाने के लिए किये थे। यदि सरकार इस बात के लिये तैयार न हो तो सब राष्ट्र के हित के लिये, हिन्दी के हित के लिए हैं। यदि आमजन संघर्ष के लिए तैयार हैं तो सरकारों को इस कार्य को करना ही होगी।

आइये! राष्ट्र हित के लिए संकल्प लें। हम हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनवाने के लिये पुरजोर संघर्ष करेंगे तो निश्चित जानों, हम अपने उद्देश्य में निश्चित रूपेण सफल होंगे और इस राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने में सफल होंगे।

नशे से छुटकारा-आर्यपथ

-आचार्य डॉ० महेश आर्य

मनुष्य खुशी बाँटना चाहता है और दुःख में सहारा ढूंढता है। विद्वान् व्यक्ति दोनों परिस्थितियों में सम रहता है। परन्तु विद्याभाव में व्यक्ति अज्ञानता के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार के नशों में गिर जाता है। दुर्भाग्य से संसार भर को रास्ता दिखाने वाला हमारा देश आज अनेक प्रकार के मादक द्रव्यों से ग्रस्त है। नशा (शराब आदि) सर्वप्रथम बुद्धि पर अपना प्रभाव डालता है। इसके साथ-साथ यह व्यक्ति को शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, चारित्रिक रूप से कमजोर कर देता है। वर्तमान में धूम्रपान, शराब (बीयर आदि भी) तम्बाकू चबाना, स्मैक, चरस, गांजा, हेरोइन, भांग, अफीम आदि प्रमुख नशे समाज में चारों तरफ प्रचलित हैं। गरीब-अमीर, राजा-रंक, अध्यापक, व्यापारी, व्यवसायी, वकील, बूढ़े, बालक, अनपढ़, पढ़े-लिखे सब न्यूनाधिक इन नशों से ग्रस्त हैं। आओं देखें ये बुद्धिनाशक पदार्थ किस प्रकार हमारे समाज को जकड़े हुए हैं-

१. हमारे देश में प्रतिदिन ११ करोड़ सिगरेट का धूम्रपान होता है अर्थात् वर्ष भर में हमारा देश ५० अरब रूपये का धुआँ उड़ा देता है। जिससे हर छह सैकण्ड में एक असामयिक मृत्यु हो जाती है। दुनियाभर में तम्बाकू सेवन से जितनी मौतें होती हैं उसका १/६ हिस्सा दुर्भाग्य से हमारे देश का है। देश में जितनी मौतें होती हैं उसका १० प्रतिशत हिस्सा धूम्रपान के कारण से हैं। संसार भर में ११.२ प्रतिशत लोग धूम्रपान करते हैं जिसका बड़ा हिस्सा हमारे देश में है।

२. धुम्रपान के अलावा हमारे देश में सबसे ज्यादा नशा शराब (जिसमें कच्ची-पक्की, देशी-अंग्रेजी, बीयर आदि सम्मिलित है) का होता है। पिछले ११ वर्षों में हमारे देश में शराब की खपत दोगुनी हो चुकी है। दुनियाभर में वर्ष भर में लगभग २.५ लाख करोड़ रूपये की शराब पी ली जाती है जिसका सबसे बड़ा योगदान हमारे देश से है। देशभर में एक वर्ष में २.६ लाख लोग शराब के कारण मारे जाते है जिससे लाखों औरतें विधवा व लाखों बच्चे अनाथ हो जाते हैं व भयंकर गरीबी में जीवन यापन करने को मजबूर हो जाते हैं। इसी शराब के नशे में छोटी-छोटी आयु के युवा अपने जीवन के महत्व को भुलाकर इसे बर्बादी की ओर ले जा रहे हैं। इसी नशे में एक पिता अपनी पत्नी और बेटी में अन्तर भूल जाता है। शराब माफिया समाज को निगल रहा है। ऐक्सीडेन्टों व लड़ाई झगड़ों का एक प्रमुख कारण शराब ही है। दुर्भाग्य से राजस्व व विकास के नाम पर सरकारें इसे बढ़ावा दे रही हैं। जिस देश में लाखों बालक धनाभाव में शिक्षा से वंचित हैं वहां हजारों करोड़ रूपये इस पर बहा दिए जाते हैं।

३. इसके अलावा बड़े-बड़े नशे जिसमें स्मैक, हेरोइन, चरस, गांजा, अफीम आदि हमारे युवाओं को, विद्यार्थियों को स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सिटी, हॉस्टल्स में उपलब्ध कराई जा रही हैं जो हमारी युवा पीढ़ी को बर्बादी की तरफ तेज गति से बढ़ा रही हैं और हजारों की संख्या में हर वर्ष उनके जीवन निगल रहे हैं। उनके माता पिता की आकांक्षाओं को मिट्टी में मिला रहे हैं। पंजाब व हरियाणा जैसे समृद्ध राज्य आज इन्हीं नशों में जकड़े हुए हैं। जो युवक एक बार इस दलदल में जब फंस जाता है तो मरकर ही छूटता है।

कैसे बचें हम? कौन बचाएगा? केवल एक ही मार्ग है वह है आर्य मार्ग! यही वो विद्या है जो हमें और हमारे उजड़ते परिवारों को बचा सकती है। आवश्यकता है हम स्वयं इस विद्या से, आर्यत्व से ओत-प्रोत हों और अन्यों को भी करें। ध्यान रहे प्राचीन काल में हमारे पूर्वज इन नशों से कोई सम्बन्ध नहीं रखते थे। यही उन्नति का मार्ग है।

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	01 अगस्त	दिन-गुरुवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पुष्य
पूर्णिमा	15 अगस्त	दिन-गुरुवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-श्रवण
अमावस्या	30 अगस्त	दिन-शुक्रवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-मघा
पूर्णिमा	14 सितम्बर	दिन-शनिवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-पूर्वाभाद्रपदा

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

[सदा सत्यव्यवहार करना चाहिये]

प्रश्न-क्यों जी! सर्वथा सत्य से तो कोई व्यवहार सिद्ध नहीं हो सकता। देखो, व्यापार में सत्य बात कह दें, तो किसी पदार्थ का विक्रय न हो। हार-जीत के व्यवहारों में मिथ्या साक्षी न खड़े करें, तो हार हो जाए, इत्यादि हेतुओं से सब ठिकानों में सत्यभाषणादि कैसे कर सकते हैं ?

उत्तर-यह बात महामूर्खता की है।

[लालबुझक्कड़ की दृष्टान्त]

जैसे किसी ग्राम में एक लालबुझक्कड़ रहता था, कि जिसको पाँच सौ ग्राम वाले महापण्डित और एक गुरु मानते थे। एक रात में किसी राजा का हाथी उसी ग्राम के समीप होकर कहीं स्थानान्तर को चला गया था। उसके पग के चिह्न जहाँ-तहाँ मार्ग में बन रहे थे, उनको देखके खेती करने हारे ग्रामीण लोगों ने परस्पर पूछा कि भाईयों! यह किसका खोज है? सबने कहा कि हम नहीं जानते। फिर सब की सम्मति से लालबुझक्कड़ को बुला के पूछा कि-'तुम्हारे विना कोई भी मनुष्य इसका समाधान नहीं कर सकता। कहो यह किसको पग का चिह्न है'? जब वह रोया और रोकर हंसा, तब सब ने पूछा कि-'तुम क्यों रोये और क्यों हंसे?' तब वह बोला कि जब मैं मर जाऊँगा, तब ऐसी-ऐसी बातों का उत्तर विना मेरे कौन दे सकेगा? और हँसा इसलिए कि इसका उत्तर तो सहज है, सुनो -

"लालबुझक्कड़ बूझिया और न बूझा कोय।
पग में चक्की बाँधके हिरणा कूदा होय ॥"

जो जंगल में हिरन होता है, वह किसी जंगली मनुष्य की चक्की के पाटों को अपने पगों में बाँधके कूदता चला गया है। तब सुनकर सब लोगों ने वाह-वाह बोलकर उसको धन्यवाद दिया कि-'तुम्हारे सदृश पृथिवी में कोई पण्डित नहीं है कि ऐसी-ऐसी बातों का उत्तर दे सके।

जब वह लालबुझक्कड़ ग्राम की ओर आता ही था, इतने में एक ग्रामीण की स्त्री ने जंगल से बेर लाके, जो अपना लड़का छप्पर के खम्भे को पकड़े खड़ा था, उसको कहा कि-''बेटा! बेर ले।'' तब उसने हाथों की अंजली बाँधके बेरों को ले लिया। परन्तु जब छप्पर की थूनी हाथों के बीच में रहने से उसका मुख बेर तक न पहुँचा, तब लड़का रोने लगा। लड़के को रोते देखकर उसकी माँ और बाप भी रोने लगे कि-'हाय हमारे लड़के को खम्भे ने पकड़ लिया रे रे रे!' तब उसको सुनके अड़ौसी-पड़ौसी भी रोने लगे कि-'हाय रे! दय्या! इन के लड़के को खम्भे ने कैसा पकड़ लिया है कि छोड़ता ही नहीं।'

तब किसी ने कहा कि-'लालबुझक्कड़ को बुलाओ। उसके बिना कोई भी लड़के को नहीं छुड़ा सकेगा।' तब एक मनुष्य उसको शीघ्र बुला लाया। फिर उसको पूछा कि-'यह लड़का कैसे छूट सकता है?' तब वह बोला कि-''सुनो लोगे! दो प्रकार से यह लड़का छूट सकता है, एक तो यह कि कुल्हाड़ा लाके लड़के का एक हाथ काट डालो, अभी छूट जाय। और दूसरा उपाय यह है कि प्रथम छप्पर को उठाके नीचे धरो फिर लड़के को थूनी के ऊपर से उतार ले आओ।'' तब लड़के का बाप बोला कि-'हम दरिद्र मनुष्य हैं हमारा छप्पर टूट जायेगा तो फिर छाना कठिन है।' तब लालबुझक्कड़ बोला कि-'लाओ कुल्हाड़ा, फिर क्या देख रहे हो?'

कुल्हाड़ा लाके जब तक हाथ काटने को तैयार हुए, तब तक दूसरे ग्राम से एक बुद्धिमती स्त्री भी हल्ला सुनकर वहाँ पहुँचकर देखके बोली कि-'इसका हाथ मत काटो। मैं इस लड़के को छुड़ा देती हूँ।' जब वह खम्भे के पास जाके लड़के की अञ्जलि के नीचे अपनी अञ्जलि करके बोली कि-'बेटा ! मेरे हाथ में बेर छोड़ दे।' तब वह बेर छोड़के अलग हो गया। फिर उसको बेर दे दिये। वह खाने लगा। तब तो बहुत क्रुद्ध होकर लालबुझक्कड़ बोला कि-'यह लड़का छः महीने के बीच मर जायेंगा। क्योंकि जैसा मैंने कहा था वैसा ही करते तो न मरता।' तब तो उसके माँ-बाप घबराके बोले-'अब क्या करना चाहिऐ'? तब उस स्त्री ने समझाया कि यह बात झूठ है। और जो हाथ के काटने से अभी मर जाता, तो तुम क्या करते ? मरण से बचने का कोई औषध नहीं। तब उनकी घबराहट छूट गया।

वैसे जो मनुष्य महामूर्ख हैं वे ऐसा समझते हैं कि सत्य से व्यवहार का नाश और झूठ से व्यवहार की सिद्ध होती है,। परन्तु जब किसी को कोई एक व्यवहार में झूठा समझ ले तो उसकी प्रतिष्ठा और विश्वास सब नष्ट होकर उसके सब व्यवहार नष्ट हो जाते और जो सब व्यवहारों में झूठ को छोड़कर सत्य ही कहते हैं, उनको लाभ ही लाभ होते हैं, हानि कभी नहीं। क्योंकि सत्य व्यवहार करने का नाम **'धर्म'**, और विपरीत वर्त्तने का नाम **'अधर्म'** है। क्या धर्म का सुखलाभरूपी और अधर्म का दुःखरूपी फल नहीं होता ?

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अतः आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अतः पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/हिन्दी में पत्रिका पर जाएं।

17 जुलाई- 15 अगस्त 2019 **श्रावण** ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		उत्तराषाढ़ा कृष्ण प्रतिपदा 17 जुलाई	श्रवण कृष्ण द्वितीया 18 जुलाई	धनिष्ठा कृष्ण द्वितीया 19 जुलाई	शतभिषा कृष्ण तृतीया 20 जुलाई	शतभिषा कृष्ण चतुर्थी 21 जुलाई
पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण पंचमी 22 जुलाई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण षष्ठी 23 जुलाई	रेवती कृष्ण सप्तमी 24 जुलाई	अश्विनी कृष्ण अष्टमी 25 जुलाई	भरणी कृष्ण नवमी 26 जुलाई	कृतिका कृष्ण दशमी 27 जुलाई	रोहिणी कृष्ण एकादशी 28 जुलाई
मृगशिरा कृष्ण द्वादशी 29 जुलाई	आर्द्रा कृष्ण त्रयोदशी 30 जुलाई	पुनर्वसु कृष्ण चतुर्दशी 31 जुलाई	पुष्य कृष्ण अमावस्या/प्रतिपदा 1 अगस्त	आश्लेषा शुक्ल द्वितीया 2 अगस्त	मघा/पू॰ फाल्गुनी शुक्ल तृतीया 3 अगस्त	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल चतुर्थी 4 अगस्त
हस्त शुक्ल पंचमी 5 अगस्त	चित्रा शुक्ल षष्ठी 6 अगस्त	स्वाती शुक्ल सप्तमी 7 अगस्त	विशाखा शुक्ल अष्टमी 8 अगस्त	अनुराधा शुक्ल नवमी 9 अगस्त	ज्येष्ठा शुक्ल दशमी 10 अगस्त	मूल शुक्ल एकादशी 11 अगस्त
पूर्वाषाढ़ा शुक्ल द्वादशी 12 अगस्त	उत्तराषाढ़ा शुक्ल त्रयोदशी 13 अगस्त	श्रवण शुक्ल चतुर्दशी 14 अगस्त	श्रवण शुक्ल पूर्णिमा 15 अगस्त			उपाकर्म पर्व 15 अगस्त

16 अगस्त-14 सितम्बर 2019 **भाद्रपद** ऋतु- शरद

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
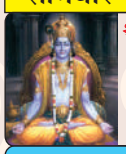	श्री कृष्णचन्द्र जयन्ती भाद्रपद कृष्ण अष्टमी 24 अगस्त			धनिष्ठा कृष्ण प्रतिपदा 16 अगस्त	शतभिषा कृष्ण द्वितीया 17 अगस्त	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण तृतीया 18 अगस्त
उत्तराभाद्रपदा कृष्ण चतुर्थी 19 अगस्त	रेवती कृष्ण पंचमी 20 अगस्त	अश्विनी कृष्ण षष्ठी 21 अगस्त	भरणी कृष्ण षष्ठी 22 अगस्त	कृतिका कृष्ण सप्तमी 23 अगस्त	रोहिणी कृष्ण अष्टमी 24 अगस्त	मृगशिरा कृष्ण नवमी 25 अगस्त
आर्द्रा कृष्ण दशमी/एकादशी 26 अगस्त	पुनर्वसु कृष्ण द्वादशी 27 अगस्त	पुष्य कृष्ण त्रयोदशी 28 अगस्त	आश्लेषा कृष्ण चतुर्दशी 29 अगस्त	मघा कृष्ण अमावस्या 30 अगस्त	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल प्रतिपदा 31 अगस्त	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल द्वितीया/तृतीया 1 सितम्बर
हस्त शुक्ल चतुर्थी 2 सितम्बर	चित्रा/स्वाती शुक्ल पंचमी 3 सितम्बर	विशाखा शुक्ल षष्ठी 4 सितम्बर	अनुराधा शुक्ल सप्तमी 5 सितम्बर	ज्येष्ठा शुक्ल अष्टमी 6 सितम्बर	मूल शुक्ल नवमी 7 सितम्बर	मूल शुक्ल दशमी 8 सितम्बर
पूर्वाषाढ़ा शुक्ल एकादशी 9 सितम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल द्वादशी 10 सितम्बर	श्रवण शुक्ल त्रयोदशी 11 सितम्बर	धनिष्ठा शुक्ल चतुर्दशी 12 सितम्बर	शतभिषा शुक्ल चतुर्दशी 13 सितम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल पूर्णिमा 14 सितम्बर	

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

9. No one should be content with promoting his own good only; on the contrary, he should look for his good in promoting the good of all.

10. All men should subordinate themselves to the laws of society calculate to promote the well-being of all, they should be free in regard to the laws for promoting individual well-being.When the Niyamas were being drafted, the Brahma Samajists suggested that if No.3 is left out, most of them would join the Arya Samaj. But Swamiji would not agree. Rai bahadur Mul Raj who rendered considerable help in this drafting suggested that if the clause 'Veda is the scripture of true knowledge,' is modified as 'Veda is the scripture of knowlwdge,' the rule would become more Catholics and there would be no hesitation with regard to its acceptance. Swamiji who believed he had to guide public opinion and follow it blindly did not set much store by this suggestion. Organisers and founders of societies are generally anxious to be deified or honoured in various ways but nothing was farther from Swamiji's heart than this gurudom. At one of the meetings Babu Sarda Prasad Bhattacharya proposed that the title of 'patron of Arya Samaj' be conferred upon Swamiji. The suggestion met the approval of everybody present, but Swamiji smiled and said,"The word patron suggests 'gurudom' which I am out to destroy. I don't want to found a new sect and become a guru myself. Such titles prove detrimental to the cause itself in the long run." The Babu then suggested that Swamiji should at least accept the title of Parama Sahayaka(the supremme commander), to Swamiji 's reply was, "if you call me parama sahayaka, by what name are you going to call the Almighty. If you insist on putting down my name, put it down as an ordinary member." One day Swamiji arrived in the Arya Samaj meeting when the prayer was going on. Many a member stood up to receive him. When the prayer was over, Swamiji observed, "At the time of prayer when people are holding communion with God, They should not get up to receive anybody however exalted he may be. None in the world is greater than God, and therefore to attend to some other thing in the midst of prayer is as if offering insult to the almighty." Equally significant is another similar incident. The upa-niyamas (bys-laws) of the Arya Samaj were passed on the 6th November, 1877.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

सत्र में आने से पूर्व अपने धर्म के बारे में मुझे बहुत सारे संकोच थे। किन्तु सत्र में आने के बाद मुझे अपने धर्म, देश व अपने ईश्वर के बारे में जानने का मौका मिला। मैंने अपने धर्म को बहुत ही करीब से महसूस किया। सत्र में मैंने भिन्न-भिन्न उदाहरणों द्वारा समाज व परिवार में रहने के मूल मत्र सीखें।

यह सत्र जीवन व राष्ट्र मूल्यों पर आधारित था। अत: मैं चाहूंगा कि आने वाले समय में अगर आर्य समाज को मेरी किसी भी प्रकार के सहयोग कि आवश्यकता हो तो मुझे निसंकोच बताया जाए।

मैं राष्ट्रीय आर्य के महान निर्माण में किसी भी प्रकार से सहायता करना अपना कर्म समझूगां। हांलाकि अगर मेरे व्यवसाय से जुड़ी किसी भी प्रकार के सहयोग को मैं आसानी पूर्वक कर सकता हूँ

नाम: आदित्य वशिष्ठ, आयु: ३० वर्ष, योग्यता: इंजीनियर, कार्य: वर्कशॉप पता: दिल्ली-८६।

पहले भी आर्य नवद्विवसीय शिविर किया है बार-बार लेकिन छात्रों के लिये। परन्तु इस बार अद्‌भुत अनुभव हुआ, ज्ञान हुआ। अपने बारे में, आर्य के बारे में, देश के बारे में, उपासना पद्धति के बारे में, योग के बारे में। पहले में पाखण्डी बाबाओं के पास जा चुका हूँ और लगातार जाता भी रहा हूँ। लेकिन अभी सब समझ आया है। योग के बारे में उपासना पद्धति के बारे में, धर्म के बारे में, अपने बारे में, पाखण्ड के बारे में और सही गलत के बारे में, अभी से में आर्य नियम, वेद नियम का पालन करूगां। आर्यावर्त्त के हित में कार्य करूगाँ और दूसरे लोगों को भी साथ में जोड़ता हुआ चलूगां, पाखण्ड से दूर रहूगां, सत्यार्थ प्रकाश को कण्ठस्थ करने के लिए कार्य करूगां। जय आर्य, जय आर्यावर्त्त।

आर्थिक सहयोग के साथ अपने मित्रों, सगे-सम्बधियों साथियों को शिविर में लेकर आऊगां। आर्य साहित्य का प्रचार-प्रसार करूगां, जितना मुझसे होगा पूरे सामर्थ्य के साथ करूगां।

नाम: अमित राणा, आयु: ३१ वर्ष, योग्यता: स्नातक, कार्य: व्यापार, पता: दिल्ली।

मैं राकेश कश्यप, मैं बक्सर (बिहार) में निवासरत हूँ। मैं हमेशा से यही सोचता था कि मैं गरीबों, पीड़ितों, बेरोजगारों, अत्यन्त दुखियों को हर सम्भव, हर तरह से मदद करना चाहता था। लेकिन मुझे कोई रास्ता नहीं मिल पा रहा था कि मैं कैसे अपने देश की सेवा कर सकूं और अपने देश के हर पीड़ित, शोषित लोगों का जो दुख है उसको खत्म कर सकूं। लेकिन जब मैं टटेसर गांव के आर्ष गुरुकुल में आया तो मुझे वास्तविक रूप से अपने स्वयं के बारे में जाना और यह पाया कि मैं अपने देश को किस तरह से, कौन से मार्ग को अपनाकर राष्ट्र को अखण्ड राष्ट्र और पुन: विश्वगुरु बना सकूं।

नाम: राकेश कश्यप, आयु: २१ वर्ष, योग्यता: स्नातक, कार्य: विद्यार्थी, पता: बक्सर, बिहार।

इस सत्र में आने से पहले मुझे धर्म व राष्ट्र के प्रति इतना ज्ञान नहीं था। अब इस सत्र में उपस्थित होकर मैंने धर्म व राष्ट्र के बारे में बहुत जानकारी प्राप्त की। इस जानकारी को प्राप्त करके मैंने अपने ज्ञान में थोड़ी बढ़ोतरी की। आचार्य जी के इस सत्र में आकर मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। पहले मैं बुरी आदतों में फसां था लेकिन आचार्य जी के इस सत्र में उपस्थित होकर मुझे बुरी आदतों के प्रति ज्ञान प्राप्त हुआ और मैंने अपनी सारी बुरी आदतें छोड़ दी।

मैं एक छात्र हूँ और मैं अपना योगदान प्रचारक के रूप में करना चाहूँगा और मैं अपना कार्य पूर्ण निष्ठा से करूगां

नाम: रितिक रोशन, आयु: १८ वर्ष, योग्यता: ११वीं, कार्य: विद्यार्थी, पता: फिरोजपुर झिरका।

मुझे इस सत्र के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। मेरे भाई सुरेन्द्र ने मुझे बताया की दो दिन के लिए सत्र लग रहा है तो उसमें जाना है तो मैं आया। मुझे यहां अनेक ऐसी जानकारियां मिली जिनके बारे तो मुझे पता नहीं था। यहां मुझे अपने धर्म का मतलब बताया गया। जीने का सही उद्देश्य बताया गया। देश के बारे में अनेक जानकारियाँ मिली। अत: मुझे यहां आकर बहुत अच्छा अनुभव हुआ। अत: मैं भाई का बहुत आभारी रहूगां कि मुझे असल में इतनी जानकारियां करवाई।

नाम: अमित सैनी, आयु: १७ वर्ष, योग्यता: ९वीं, कार्य: विद्यार्थी, पता: मेवात, हरियाणा।

मैं दो दिनों में काफी अपने अन्दर Improvement लाया हूँ। इस सत्र से मुझे बहुत सारी जानकारी मिली है। और इस सत्र में मुझे काफी अच्छा भी लगा। मैंने बडे ही ध्यान पूर्वक सारी बातों को पूरे उत्साह के साथ सुना और इन सारी जानकारियों को प्राप्त करने के बाद मुझे लगता है कि मुझे भी आर्य होना चाहिए।

नाम: भारत चौधरी, आयु: २० वर्ष, योग्यता: १२वीं, कार्य: विद्यार्थी, पता: मथुरा, उ.प्र.।

संध्या काल

श्रावण- मास, वर्षा ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(17 जुलाई 2019 से 15 अगस्त 2019)
प्रात: काल: 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय काल: 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

भाद्रपद- मास, शरद ऋतु, कलि-5120, वि. 2076
(16 अगस्त 2019 से 14 सितमबर 2019)
प्रात: काल: 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय काल: 6 बजकर 45 मिनट से (6.45 P.M.)

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।